यूक्रेन से बाहर जाओ!

24 फरवरी 2022 को व्लादिमीर पुतिन के नेतृत्व वाले रूसी राज्य ने यूक्रेन के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया। रूस एकाधिकार पूंजीवादी और साम्राज्यवादी देश है। इसका जुड़ाव सामाजिक साम्राज्यवादी (social imperialistic) चीन से है और यही चीन रूस का सहयोगी है। यूक्रेन आत्मनिर्भर देश नहीं है यह एक आश्रित देश है जो संयुक्त राज्य अमेरिका, यूरोपीय संघ, यूके साम्राज्यवाद और नाटो से संबद्ध एक आश्रित देश है। यूक्रेन को आगे रखकर अमेरिका और उसके सहयोगी अपने रूसी प्रतिद्वंद्वियों के खिलाफ एक छद्म युद्ध में लगे हुए हैं, जो आज़ोव बटालियन जैसी नव-नाजी सेनाओं का उपयोग कर रहे हैं। यूक्रेन के कुछ हिस्सों पर कब्जा करने और छेड़े गए युद्ध से ये परिस्थिति पैदा हो गई है कि रूस की भर्त्सना और यूक्रेनी राष्ट्र के आत्मनिर्णय के अधिकार की रक्षा के लिए कटिबद्ध हुआ जाए।

रूस साम्राज्यवादी होने की विशेषताओं पर खरा उतरता है, एकाधिकार पूंजीवाद सघनता से जमा हुआ है, रूस में पूंजी निर्यात पर्याप्त है, ट्रस्ट और बैंकों के विलय पर्याप्त है जिसका मतलब है कि यहाँ वित्तीय पूंजी मौजूद है यही वीत्तीय पूँजी "निर्भर" देशों को निर्यात की जाती है। राजनीतिक रूप से, रूसी साम्राज्यवाद उसकी विदेश नीति में स्पष्ट नज़र आता है। गद्दाफी को हटाने के बाद रूस ने लीबिया में हस्तक्षेप किया; इसने सीरिया में युद्ध में भाग लिया, उस देश में वायु और नौसैनिक अड्डों का निर्माण किया; मध्य अफ्रीकी गणराज्य और माली में इसकी सक्रियता है। रूस ने संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद में डेमोक्रेटिक पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ कोरिया पर पश्चिमी प्रतिबंधों को अपना समर्थन दिया।
1999 में अफगानिस्तान में पारगमन सामग्री भेजने के लिए नाटो को Ulyanovsk-Vostochny Airport का उपयोग करने की अनुमति दी गई थी। बाद में 21 मार्च 2012 में, रूसी उप प्रधान मंत्री दिमित्री रोगोज़िन ने सफाई दी की कि इस केंद्र का उपयोग इराक और अफगानिस्तान के लिए कुछ कार्गो विमानों के लिए नाटो विमानों द्वारा हवाई परिवहन के लिए किया जाएगा। ले पेन, ओर्बन और ट्रम्प के साथ पुतिन के सौहार्दपूर्ण संबंध किसी से छिपे नहीं हैं।

जैसा कहा जाता है कि "परदेस के करीब", दक्षिण ओसेशिया, अब्खाज़िया में रूसी साम्राज्यवादी प्रभाव देखा गया है; मोल्दोवा से, ट्रांसनिस्ट्रिया तोड़कर वहां एक सैन्य अड्डा स्थापित किया गया; 'पीपुल्स रिपब्लिक' ने यूक्रेन में बेलारूस, कजाकिस्तान, और डोनबास में भी यही किया। इन सभी देशों और क्षेत्रों में भाड़े के सैनिकों के रूसी अर्धसैनिक नेटवर्क ने सक्रिय भूमिका निभाई है। इन भाड़े के सैनिकों (Mercenaries) के रूसी अर्धसैनिक नेटवर्क को वैगनर समूह के रूप में जाना जाता है, और यह वैनगर समूह पुतिन का करीबी माना जाता है। अतः यूक्रेन पर आक्रमण रूसी साम्राज्यवाद का अभिन्न अंग है।

सोवियत संघ के टूटने के बाद अमेरिका और जर्मन साम्राज्यवाद ने मध्य और पूर्वी यूरोप में अपना प्रभाव बढ़ाने का प्रयास किया। उन्होंने नाटो के माध्यम से संयुक्त रूप से जर्मन लोकतांत्रिक गणराज्य पर कब्जा कर लिया, बहुराष्ट्रीय यूगोस्लाविया को तोड़ दिया, चेकोस्लोवाकिया को दो हिस्सों में तोड़ दिया और नाटो में कुछ 14 नए राज्यों को शामिल कर लिया। साथ ही अमेरिकी साम्राज्यवाद ने जर्मन साम्राज्यवाद को अपने मातहत करने की कोशिश की है जो दशकों से रूस के साथ आर्थिक संबंध बनाए हुए हैं। स्पष्ट है कि बाइडेन के नेतृत्व में अमेरिका ने क्लिंटन की आक्रामक नीतियों को जारी रखते हुए रूस के साथ टकराव की नीति अपनाई है।

2014 के "मैदान" की घटनाओं के माध्यम से निर्वाचित रूस-उन्मुख नेता Yanukovych को एक तख्तापलट द्वारा हटा दिया गया। Yankovych को अमेरिकी समर्थन प्राप्त यात्सेन्युक द्वारा प्रतिस्थापित किया गया। इसके बाद, विशेष रूप से निवेश में, रूसी कुलीन वर्गों के खर्चे पर पश्चिमी आर्थिक हितों का विस्तार किया गया। अमेरिका ने रूस और रूस के जातीय-अल्पसंख्यक के हितों को हाशिए पर धकेल दिया। "मैदान तख्तापलट" के जवाब में, सुरक्षा चिंताओं के लिए, रूसी राजधानी ने क्रीमिया पर कब्जा कर लिया। गौरतलब है कि क्रीमिया 1954 से यूक्रेन का हिस्सा था। 2014 और 2015 के मिन्स्क समझौते का सम्मान नहीं किया गया था। मिन्स्क समझौता

डोनेट्स्क और लुगांस्क को संघीय यूक्रेन संघ के तहत एक स्वायत्तता प्रदान करते थे। दूसरा समझौता फ्रांस और जर्मनी द्वारा किया गया था, उसे भी तोड़ दिया गया। यूक्रेनियों द्वारा यह तर्क दिया गया था कि स्वायत्तता तभी संभव है जब पूर्वी यूक्रेन से रूसी सैनिकों को वापस हटा लिया जाए।

ऐतिहासिक रूप से डोनबास और लुगांस्क यूक्रेनी क्षेत्र रहे हैं। 1897 की जनगणना से पता चलता है कि रूसियों में इन दोनों क्षेत्रों की आबादी का सिर्फ 18% हिस्सा था। स्टालिन के नेतृत्व में सोवियत संघ ने भाषाई समानता के क्षेत्रों के आधार पर संघ गणराज्यों की स्थापना की, और सोवियत यूक्रेन के संदर्भ में भी यही स्थिति थी। यूक्रेन की क्षेत्रीय अखंडता सोवियत काल से नीचे गिर रही थी, जो 1991 में एक यूक्रेन का स्वतंत्र गणराज्य बन जाने के बाद भी जारी रही। जारशाही और बाद में सोवियत सत्ता के तहत पूर्वी यूक्रेन में औद्योगीकरण हुआ जिसके कारण पूर्वी यूक्रेन में जो रूसी जनसंख्या का प्रतिशत बढ़ा, उसमे सोवियत संघ के अंत के बाद गिरावट आई। 2001 में लुगांस्क क्षेत्र की रूसी आबादी 39% और डोनेट्स्क क्षेत्र में 38% थी। डोनबास क्षेत्र के यूक्रेनियन भी रूसी बोलते हैं। डोनाबास की इसी भाषाई स्थिति ने रूसी राज्य को यह दावा करने के लिए प्रेरित किया है कि डोनबास के निवासी रूसी हैं, जबकि इस मामले मे यह सही दावा नहीं है। (यद्यपि ये उसी तरह से है जैसे कैटेलोनिया को स्पेनिश मान लिया जाए क्योंकि कैटलोनिया के अधिकांश लोग कैटलोनियन के अलावा स्पेनिश भी बोलते हैं)। ख्रुश्चेव और ब्रेझनेव के तहत, यूक्रेन का रुसीकरण शुरू किया गया था। बाद के नेताओं के तहत एक काल्पनिक 'सोवियत राष्ट्र' बनाने की मांग की गई थी, जो बहु-राष्ट्रीय सोवियत संघ की जगह ले सके। बहरहाल आंकड़े फिर भी सुझाव देते हैं कि स्वतंत्र यूक्रेन के गठन के बाद रूसियों ने स्पष्ट रूप से इन दो क्षेत्रों में सारभूत अल्पसंख्यक बना दिया। उनके अधिकारों का सम्मान नहीं किया गया। 2014 के बाद वे आज़ोव बटालियन के निशाने पर आ गए जिसके कारण कई मौतें हुईं।

सेंट पीटर्सबर्ग के राजनेता तानाशाही चाहते हैं

सेंट पीटर्सबर्ग के उप महापौर और 6 मिलियन के शहर के बाहरी संबंधों के लिए समिति के प्रमुख व्लादिमीर पुतिन ने जर्मन व्यापार प्रतिनिधियों के सामने यह स्पष्ट कर दिया कि चिली मॉडल के बाद एक सैन्य तानाशाही रूस की मौजूदा राजनीतिक समस्याओं के लिए एक वांछनीय समाधान होगा। WDR द्वारा टीवी फीचर "ड्राइव टू द ईस्ट" (सोमवार, 3 जनवरी 1994, पश्चिम 3 को 21.15 से 21.45 बजे तक) में इसकी सूचना दी गई थी। पुतिन पीटर्सबर्ग में पूर्व जीडीआर जनरल वाणिज्य दूतावास में आयोजित एक बैठक में बीएएसएफ, बैंक ऑफ ड्रेसडेन, अल्काटेल और अन्य के प्रतिनिधियों के सवालों का जवाब दे रहे थे।

इस प्रकार पुतिन ने "आवश्यक" और "आपराधिक" हिंसा के बीच अंतर किया। उन्होंने जोर देकर कहा, राजनीतिक हिंसा "आपराधिक" है अगर इसका उद्देश्य बाजार आधारित आर्थिक संबंधों को खत्म करना है; यह "आवश्यक" है यदि यह निजी पूंजी निवेश को बढ़ावा देता है या उसकी रक्षा करता है। निजीकरण के संक्रमण के मार्ग में आने वाली कठिनाइयों को देखते हुए पुतिन ने येल्तसिन और सेना द्वारा पिनोशे मॉडल की तर्ज पर तानाशाही स्थापित करने की तैयारी की संभावना को स्पष्ट रूप से मंजूरी दे दी। पुतिन की टिप्पणियों का जर्मन कॉर्पोरेट प्रतिनिधियों के साथ-साथ वहां मौजूद जनरल कौंसल के प्रतिनिधियों ने दोस्ताना तालियों से स्वागत किया।

टिप्पणियाँ:
1. WDR - (Westdeutscher Rundfunk) एक सार्वजनिक टीवी प्रसारक है
2. "ड्राइव टू द ईस्ट" पूर्व की ओर जर्मन विस्तारवाद का नारा था। (न्यूज़ ड्यूशलैंड, 31.12.1993)

लुगांस्क और डोनेट्स्क में, रूसी अल्पसंख्यक यूक्रेन के डोनबास क्षेत्र में अपने प्रभाव और अधिकार को पुनः प्राप्त करने के लिए, यूक्रेनी राज्य के प्रयासों का प्रतिकार करने के लिए और रूसी राज्य पर भरोसा करने आए थे। रूसी राजधानी ने डोनबास के एक हिस्से में 'पीपल्स रिपब्लिक' की स्थापना की। कब्जा किए गए डोनबास में लोगों के वर्गों को रूसी पासपोर्ट दिए गए थे। यूक्रेनियों ने अपने यूक्रेनी पासपोर्ट बरकरार रखे। 'कम्युनिस्ट आंदोलन' ने रूस को अपना समर्थन दिया, भले ही रूसी सेना वहाँ अपना समग्र नियंत्रण बनाए हुए थी। अलेक्सी मोजगोवॉय जैसे

कम्युनिस्ट कमांडरों का सफाया, जो वास्तव में पूर्वी यूक्रेन में लोगों की शक्ति का निर्माण करना चाहते थे, जिसने रूस और यूक्रेन में संयुक्त रूप से पूँजी को लाभान्वित किया। रूसी राज्य ने कम्युनिस्टों को नवंबर 2014 में डोनेट्स्क में चुनाव में खड़े होने की अनुमति नहीं दी, जबकि लुगांस्क में किसी भी पार्टी को मार्शल लॉ की शर्तों के मुताबिक राजनीतिक गतिविधि में शामिल होने की अनुमति नहीं थी।

यूक्रेन पर रूसी आक्रमण सीधे तौर पर पुतिन की एक बातचीत से पहले हुआ था जिसमें उन्होंने लेनिन और स्टालिन और बोल्शेविकों पर उनकी राष्ट्रीयता नीति के लिए हमला किया था, जिसने रूसियों से अलग, यूक्रेन राज्य का निर्माण किया था। पुतिन ने तर्क दिया कि एक आम रूसी राष्ट्र मौजूद है जिसमें यूक्रेनियन, (अल्प रूसी), बेलारूसवासी (श्वेत रूसी) और बृहत् रूसी शामिल हैं। पुतिन ने इस बात से इनकार किया कि यूक्रेन कभी एक अलग राष्ट्र के रूप में अस्तित्व में था और इसे बनाने के लिए बोल्शेविकों को दोषी ठहराया। लेनिन ने 'रूसी भूमि' को तोड़कर यूक्रेन राज्य का निर्माण किया था।

यह रूस में चरम दक्षिणपंथी और फासीवादी विचार से मेल खाता है, जो लंबे समय से यूक्रेन के बड़े हिस्से के कब्जे की मांग कर रहा है।

स्टालिन ने एक राष्ट्र को निम्नलिखित तरीके से परिभाषित किया था: "राष्ट्र एक ऐतिहासिक रूप से गठित, लोगों का स्थिर समुदाय है, जो एक समान भाषा, क्षेत्र, आर्थिक जीवन और एक समान संस्कृति में प्रकट मनोवैज्ञानिक संरचना के आधार पर बनता है।" यह एक परिभाषा थी जिसे लेनिन और बोल्शेविकों ने स्वीकार किया था। प्राचीन रूस से उभरी विभिन्न भाषाएँ तीन राष्ट्रों के अस्तित्व का संकेत देती हैं: रूसी, यूक्रेनियन और बेलारूसियन।

लेनिन ने सोवियत यूक्रेनी राज्य के गठन की वकालत की थी जैसा कि पुतिन ने ठीक ही कहा था यह आत्मनिर्णय के अधिकार के आधार पर गणराज्यों के एक स्वैच्छिक संघ का हिस्सा होगा। यही सोवियत संघ की स्थापना का आधारभूत आधार था। महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध के बाद, स्तालिन के नेतृत्व में पश्चिमी यूक्रेन के भागों को सोवियत संघ में जोड़ा गया था जो ऐतिहासिक रूप से ऑस्ट्रो-हंगेरियन साम्राज्य का हिस्सा था और बाद में प्रथम विश्व युद्ध के बाद पोलैंड द्वारा कब्जा कर लिया गया था। उसी समय यूक्रेनी राष्ट्रीय क्षेत्रों की एकता कार्पेथियन यूक्रेन के जुड़ने से पूरी हुई।

रूसी संघ की कम्युनिस्ट पार्टी, यहाँ यूक्रेन पर युद्ध का समर्थन करती है, उसको लेनिन और स्टालिन की राष्ट्रीयता नीति पर हुए हमले पर पीछे रहकर चुप नहीं रहना था। CPRF का तर्क है कि रूस के छः औद्योगिक क्षेत्र जो कभी यूक्रेन का हिस्सा नहीं थे, जिसमें लुगांस्क और डोनेट्स्क शामिल थे, लेनिन द्वारा यूक्रेन में जोड़े गए थे। (Vyacheslav Tetekin, “What is Happening in Ukraine?” New Worker, No. 2152, London, pp. 5-6). यह तर्क गलत है क्योंकि 1897 से 2001 के बीच की जनगणना के आंकड़े इसकी पुष्टि नहीं करते हैं।

मैक्सिम लैटूर ने तर्क दिया:

“19वीं शताब्दी (1897 की जनगणना) के अंत में, यूक्रेनी लोग आधुनिक डोनेट्स्क और लुगांस्क के अधिकारक्षेत्र (एकाटेरिनोस्लाव और खार्कोव प्रांतों का हिस्सा) पर हावी थे। रूसियों ने 18% बनाया। इस प्रकार, यूक्रेन के दक्षिण-पूर्वी क्षेत्रों को "मुख्य रूप से रूसी क्षेत्रों" का assignment बेहद संदिग्ध लगता है। न्यायिक दृष्टिकोण से, लगभग 100 वर्षों के लिए, दोनों क्षेत्र, यूक्रेनी SSR के हिस्से के रूप में और, एक स्वतंत्र गणराज्य के हिस्से के रूप में, यूक्रेन के थे। तो वास्तव में (so de facto) - उक्त क्षेत्र पर शुरूआत से यूक्रेनी-भाषीय आबादी का प्रभुत्व था, और यहाँ रूसी केवल दूसरे जातीय समूह थे "(M. Latur, Minsk anti-war resolution , Novorossiya , Russia-Ukraine’2014, Social statistics, Ukraine). In: http://left.by/archives/3035. Translated from the Russian). (इन आँकड़ो की पुष्टि अग्रलिखित में होती है :- eds. Klaus Bachman and Igor Lyubashenko, The Maidan Uprising, Separatism and Foreign Intervention, in the article by

Adam Balcer, “Borders Within Borderland: The cultural and ethnic diversity of Ukraine,” Frankfurt am Main, 2014, pp. 87-118).

पुतिन के विपरीत, लेनिन और स्टालिन ने स्वीकार किया कि एक यूक्रेनी राष्ट्र अस्तित्व में था: लेनिन का विचार था:
"वह जो पूंजीपतियों को सही ठहराता है, जो" हमें पोलैंड और यूक्रेन का गला घोंटने के लिए युद्ध में ले जा रहे हैं, (उदाहरण के लिए पोलैंड और यूक्रेन को कुचलने 'महान रूसियों की पितृभूमि' की रक्षा पुकारा गया) ... ये एक चाटुकारिता का द्योतक है और गंवारपन है, जो आक्रोश, अवमानना और घृणा की एक वैध भावना पैदा करता है। (“On the National Pride of the Great Russians”, Lenin, Collected Works, Vol. 21, p. 104 et passim)

लेनिन ने जारी रखते हुए कहा:

"यूक्रेन की स्वतंत्रता को The All-Russia Central Executive Committee of the R.S.F.S.R. (Russian Socialist Federative Soviet Republic) and The Russian Communist Party (Bolsheviks) दोनों के द्वारा मान्यता दी गई है। इसलिए यह स्व-स्पष्ट है और आम तौर पर मान्यता प्राप्त है कि केवल यूक्रेनी श्रमिक और किसान ही सोवियत संघ की अखिल यूक्रेन कांग्रेस में निर्णय ले सकते हैं और तय करेंगे कि क्या यूक्रेन रूस के साथ समामेलित होगा, या क्या वह एक अलग और स्वतंत्र गणराज्य बना रहेगा, और, बाद वाले मामले में, उस गणतंत्र और रूस के बीच संघीय संबंध किस प्रकार, कौन से और कैसे स्थापित होंगे। (“Letter to the Workers and Peasants of the Ukraine Apropos of the Victories Over Denikin”, Lenin, Collected Works, Vol. 30, pp. 292 and 295)

और स्टालिन ने कहा है:

"और हाल ही में यह कहा गया था कि यूक्रेनी गणराज्य और यूक्रेनी राष्ट्र जर्मनों के आविष्कार थे। हालाँकि, यह अवश्यंभावी है कि, फिर भी यहाँ एक यूक्रेनी राष्ट्र का अस्तित्व है, और इसकी संस्कृति को विकसित करना कम्युनिस्टों का कर्तव्य है। आप इतिहास के खिलाफ नहीं जा सकते। यह स्पष्ट है कि यद्यपि रूसी तत्व अभी भी यूक्रेनी शहरों में प्रबल हैं, समय के साथ ये शहर अनिवार्य रूप से यूक्रेनीकृत हो जाएंगे। (Stalin, Works, Vol. 5, pp. 48-9)

पूर्वी यूक्रेन में रूसी भाषा का उदय ज़ारवाद और सोवियत संघ के तहत औद्योगीकरण के साथ हुआ, जिसने इस क्षेत्र में विशाल लौह अयस्क और कोयले के भंडार के साथ-साथ धातुकर्म उद्योग का विकास किया।
जब तक कि सोवियत संघ के दूसरे औद्योगिक आधार का निर्माण स्टालिन काल में मैग्नीटोगोर्स्क में यूराल से परे नहीं किया गया था, तबतक डोनबास ज़ारिस्ट साम्राज्य और सोवियत संघ का प्रमुख औद्योगिक आधार था।

चल रहे युद्ध का चरित्र क्या है? एक स्तर पर युद्ध एक अंतर-साम्राज्यवादी युद्ध है जिसमें एक तरफ अमेरिका, ब्रिटेन, यूरोपीय संघ और नाटो है, और दूसरी तरफ रूसी साम्राज्यवाद शामिल है। दूसरे स्तर पर, यूक्रेन के संप्रभु राष्ट्र पर रूसी सैन्य हमला करके जो युद्ध छेड़ा है, वह रूसी साम्राज्यवाद के खिलाफ यूक्रेनी लोगों का एक राष्ट्रीय युद्ध है। जनवादी ताकतें इन दोनों देशों के दक्षिणपंथी शासन का समर्थन नहीं कर सकती हैं। यूक्रेन के मामले में, राज्य पश्चिमी पूंजीवाद पर निर्भर है, और उस राज्य ने नव-नाजीवाद को बढ़ावा दिया है। रूसी साम्राज्यवाद के दृष्टांत में, पुतिन के अधीन रूसी राज्य रूसी प्रतिक्रियावादी, इवान इलिन और अलेक्जेंडर डुगिन जैसे फासीवादी दार्शनिकों की सीमाओं के भीतर काम करता है। और तो और पुतिन को रूसी संघ की ख्रुश्चेव कम्युनिस्ट पार्टी का समर्थन प्राप्त है। इस प्रकार पुतिन को रूस में 'कम्युनिस्ट' और 'फासीवादियों' दोनों का समर्थन प्राप्त है।

रूस में पुतिन युद्ध का विरोध करने वाली ताकतों को व्यावहारिक तौर पर एकजुट-समर्थन देना जरूरी है। उन रूसी कम्युनिस्टों का समर्थन करना आवश्यक है, जिन्होंने यूक्रेन पर आक्रमण के दौरान रूसी साम्राज्यवाद के खिलाफ अंतर्राष्ट्रीयतावादी रुख अपनाया है। वे सही ढंग से इंगित करते हैं: "जो राज्य साम्यवाद-विरोधियों की अगुवाई में हैं, वे किसी भी "अ-नाज़ीकरण" को अंजाम दे ही नहीं सकते। मेहनतकश जनता पर खुली आतंकवादी तानाशाही स्थापित करने, सामाजिक प्रगति और यहां तक कि बुर्जुआ लोकतंत्र को भी आत्मविश्वास से कुचलने के रास्ते पर चलने वाले राज्य "फासीवाद-विरोधी" नहीं हैं और न ही हो सकते हैं। उनकी नीति फासीवाद-विरोधी नीति के सीधे विपरीत है। (Statement of the United Communist Party – Internationalists)

यूक्रेन में, प्रतिक्रियावादी शासन के बावजूद, रूसी आक्रमण के लिए राष्ट्रीय प्रतिरोध जारी है। साम्राज्यवाद के खिलाफ एक लोकतांत्रिक राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा बनाने के लिए मजदूर वर्ग, किसानों और मेहनतकश लोगों की एकता, एक स्पष्ट राजनीतिक अनिवार्यता है। साम्राज्यवादी प्रतिक्रियावादी ताकतों और स्थानीय प्रतिक्रियावादियों का विरोध करने वाला वास्तविक राष्ट्रीय मोर्चा ही यूक्रेनी राष्ट्र को स्वतंत्रता की ओर ले जा सकता है।

यूक्रेन से बाहर जाओ!
युद्ध बंद करो!
अमेरिका, ब्रिटेन, यूरोपीय संघ, नाटो और रूसी साम्राज्यवाद मुर्दाबाद!
रूसी और यूक्रेनी जनवादी ताकतों की एकता ज़िन्दाबाद!
रूसी साम्राज्यवादियो यूक्रेन को हर्जाना दो!

(Translated English to Hindi by "Revolutionary Democracy", India)